८ मेघदूत का उपमा-विधान

संस्कृत-साहित्य के क्षेत्र में महाकवि कालिदास की उपमा की बराबरी करनेवाला कोई दूसरा कवि नहीं है। इसका कारण यह है कि दीपशिखा कालिदास ने अपने काव्यों एवं नाटकों में जहाँ भी उपमा का उपयोग किया है वह सुन्दर, सटीक, निर्दोष और सर्वाङ्गपूर्ण है। यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है कि 'किसी देश और किसी भाषा का अन्य कोई कवि इस विषय में कालिदास की बराबरी नहीं कर सकता।' (आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी) 'मेघदूत' में जिस भाव, जिस भाषा-विचार, जिस शक्ति को व्यक्त करने के लिए कालिदास ने उपमा का प्रयोग किया है उस उक्ति, सन्दर्भ और उपमा का संयोग अद्भुत रूप में निखर गया है। उपमा को यदि उक्ति से अलग कर दिया जाय तो वह नीरस और प्रभाव-शून्य हो जाती है। उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त और निदर्शनालंकारों की भी यही स्थिति देखी जाती है। कालिदास ने उक्ति और उपमा के औचित्यपूर्ण सामंजस्य का इतना वैविध्यपूर्ण और हृदयावर्जक निर्वाह किया है कि 'उपमा कालिदासस्य' की उक्ति अक्षरशः सत्य प्रतीत होती है। कालिदास की उपमा-योजना की एक यह भी विशेषता है कि जहाँ अन्य कवि उपमेय और उपमान की योजना में दोनों के लिंग और वचन का निर्वाह नहीं भी करते वहाँ कालिदास की उपमा में यह दोष नहीं प्राप्त होता। कालिदास की उपमाएँ श्रुतिसुखद, प्रसाद गुणपूर्ण और सुन्दर होती हैं। इनकी उपमा की कोमल-कान्त पदावली की एवं हृदयहारिणी उक्ति की जितनी प्रशंसा की जाय, कम है।

कवि की कुछ उपमाएँ बहुत छोटी-छोटी हैं। अनुष्टुप् छन्द के एक चरण में वे कही गई हैं। इन उपमाओं में भी वही खूबी है जो लम्बे-लम्बे श्लोकों में गुम्फित उपमाओं में है। ये उपमाएँ नीति, सदाचार और लोकरीति की सत्यता से परिपूर्ण हैं। यही कारण है कि ये विद्वान् पण्डितों के कंठ का हार हो रही हैं। कालिदास की प्रतिभा विश्वतोमुखी थी। उनकी पहुँच पृथ्वी, आकाश, पाताल सर्वत्र थी। व्याकरण, ज्योतिष, अलंकारशास्त्र, नीतिशास्त्र, वेदान्त, सांख्य, पदार्थ-विज्ञान, इतिहास, पुराण आदि विभिन्न विद्या-शाखाओं में कवि का अबाध प्रवेश था। फलतः इनकी उक्तियों का माधुर्य तो मनोहारी हुआ ही, साथ ही गहन अध्ययन, रचना-नैपुण्य और प्रातिभ उन्मेष के कारण अभिव्यक्तियाँ युगव्यापी और चिरन्तन सौन्दर्य से मंडित हो गई हैं। मेघदूत में उपमाओं की निम्नांकित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :

पू० मे० (२)

इस श्लोक में रामगिरि के शिखर का आलिंगन करता हुआ श्याम वर्ण मेघ उपमेय तथा मिट्टी के ढूहों पर दाँतों से तिरछे प्रहार करने की क्रीड़ा में संलग्न गज उपमान है। यहाँ 'गजप्रेक्षणीय' में 'इव' (समान) का लोप हुआ है, अतः यहाँ लुप्तोपमा है।

पू० मे० (१५)

यहाँ रत्नों की कान्तियों के मिश्रण जैसे इन्द्रधनुष के टुकड़े से युक्त मेघ का श्यामशरीर उपमेय तथा मोर-पंखवाले गोपवेशधारी कृष्ण का साँवला शरीर उपमान है। इस तरह इस श्लोक में पूर्णोपमा अलंकार है।

पू० मे० (१८)

चिकने केशपाश के वर्ण के समान शिखर पर आरूढ़ मेघ के पके आम्रफलों से घिरा हुआ आम्रकूट, गगनचारियों को पृथ्वी से उस स्तन के समान दीखेगा जिसका मध्यभाग काला और शेष भाग पीला है। यहाँ वेणीवर्ण से युक्त मेघ से अच्छादित एवं पके हुए आम्रफलों से घिरे हुए आम्रकूट पर्वत की उपमा पृथ्वी के स्तन से की गई है; अतः यहाँ उपमा अलंकार है।

पू० मे० (१९)

यहाँ विभिन्न धाराओं में विभाजित रेवा (नर्मदा) की उपमा गज के मस्तक पर की गई चित्ररचना से की गई है, अतः यहाँ उपमा अलंकार है।

पू० मे० (२४)

इस श्लोक में जल का साम्य मुख से बताया गया है। उपमेयगत 'चलोर्मित्व' और 'उपमानगत' 'सभ्रूभंगत्व' भिन्न-भिन्न धर्म होने पर भी दोनों का बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव है। वेत्रवती और नायिका का साम्य गम्य होने से यहाँ एक देश-विवर्त्तिनी उपमा है।

पू० मे० (३१)

यहाँ शिप्रा-पवन की समता प्रियतम से होने के कारण पूर्णोपमा अलंकार है। शिप्रा का पवन कमल की गन्ध से सुवासित होने के कारण, याचना में चिकनी-चुपड़ी बातें बनानेवाले प्रेमी के समान स्त्रियों की रतिजन्य थकान को दूर करता है।

गम्भीरा के चित्तरूपी जल में मेघ के शरीर का प्रतिबिम्ब पड़ेगा ही। कहीं गम्भीरा की कुमुद-सी श्वेत और शफरी-सी चंचल चितवनों की ओर मेघ धृष्टता से ध्यान न दे और उसकी चितवनें व्यर्थ हो जायँ।

यहाँ 'जल' का चित्त के साथ और 'चितवन' का कुमुद एवं शफरी के साथ सादृश्य है—अतः एकदेशविवर्त्तिनी उपमा है; क्योंकि गम्भीरा का नायिका के साथ सादृश्य आर्थ है।

पू० मे० (४६)

चमेली के पुष्पों के इतस्ततः हिलने-डुलने के क्रम से हिलने-डुलनेवाले भ्रमरों की श्री को चुरानेवाली दशपुरवासिनी स्त्रियों की कौतूहल-भरी आँखों का मेघ विषय बनता हुआ जायगा।

यहाँ भ्रमर से युक्त कुन्द (चमेली) की समानता काली पुतलियों से शोभित श्वेत नेत्रोंवाली स्त्रियों से की गई है। इस श्लोक में भ्रमर से युक्त कुन्द-पुष्प उपमान है तथा दशपुरवासी स्त्रियों के नेत्र उपमेय हैं।

पू० मे० (५०)

इस श्लोक में गाण्डीवधन्वा अर्जुन की वाणवर्षा की तुलना मेघ की जलवर्षा से की गई है; अतः यहाँ उपमा अलंकार है।

पू० मे० (५२)

कस्तूरी मृगों की गन्ध से वासित हिम से श्वेत हिमालय की चोटी पर बैठा मेघ शिव के बैल द्वारा उछाले गये कीचड़ के समान प्रतीत होगा। यहाँ मेघ उपमेय तथा शिव के बैल द्वारा उछाला गया कीचड़ उपमान है।

पू० मे० (६०)

मेघ उस कैलास पर्वत का अतिथि बनेगा, जो कुमुद के समान श्वेत उच्च शिखरों के साथ आकाश में फैला हुआ है।

यहाँ कैलास पर्वत के उच्च शिखरों की तुलना कुमुद के पुष्पों से की गई है। इस श्लोक में कैलास के श्वेतोच्च शिखर उपमेय तथा कुमुद के पुष्प उपमान हैं।

पू० मे० (६१)

चिकने अंजन की तरह कृष्णकाय मेघ हाथी-दाँत के समान कैलास के तट पर घिरेगा तो उसकी शोभा गौरवर्ण के बलराम के शरीर पर रखे हुए कृष्णवस्त्र के समान होगी।